

ऋतू की सहेली

प्रेषक : सचिन कुमार

प्यारे दोस्तो !

मेरी पिछली कहानी 'ऋतू की इच्छा' को काफी अच्छा समर्थन मिला पाठकों से, इसलिए अब मैं आपको आगे की कहानी सुनाता हूँ।

ऋतू के घर में, जब भी उसके पति बाहर गए होते, तभी चला जाता था। एक दिन जब मैं ऋतू के घर गया तो उसने मुझसे कहा- मेरी एक सहेली है, उसकी शादी को २ साल हो गए हैं पर उनका कोई बच्चा नहीं हुआ। अब उसके पति का कहीं और चक्कर चल रहा है इसलिए उसका पति उसकी बिलकुल भी परवाह नहीं करता। क्या तुम उसकी थोड़ी मदद कर सकते हो? मैं समझ गया कि मुझे एक और चूत मिलने वाली है, मैं तो खुशी खुशी तैयार हो गया। मैंने ऋतू से उसका पता लिया और अगले दिन दोपहर को ११ बजे उनके घर पहुँच गया।

जब मैं उनके घर पहुँचा तो एक सुन्दर सी २५-२६ साल की लड़की ने दरवाजा खोला। ऋतू ने मुझे उसका नाम गीता बताया था, तो मैंने पूछा- क्या तुम गीता हो?

उसने कहा- हाँ !

मैंने कहा- मैं राहुल हूँ !

तो उसने कहा- आइये ना ! अन्दर आइये।

शायद ऋतू ने उसको पहले ही बता दिया था कि मैं कल आऊंगा, इसलिए घर में उसके अलावा कोई और नहीं था। फिर भी मैंने ऐसे ही पूछ लिया कि नौकर नहीं है घर पे?

तो उसने कहा- आज सबको छुट्टी दे रखी है।

मैंने कहा- शायद ऋतू ने आपको पहले ही सब कुछ बता दिया था?

गीता ने कहा- हाँ !

गीता ने लाल रंग का सूट डाला हुआ था जो कि एकदम पतला झीना था, जिसमें से उसकी ब्रा साफ़ नजर आ रही थी। उसके स्तन भी ३४ साइज के होंगे। मैं तो उनको देखता ही रह गया। अचानक गीता ने पूछा- क्या देख रहे हो?

मैंने कहा- जो चीज़ देखने की है, वही देख रहा हूँ !

तो वो कहने लगी- ऐसे ही देखनी है या फिर छू कर भी देखनी है?

मैंने कहा- यही नहीं सब कुछ छू कर देखना है !

तो उसने कहा- उसके लिए तो तुम्हें अन्दर बेडरूम तक आना पड़ेगा !

मैंने कहा- चलो फिर देर किस बात की है?

हम दोनों उठ कर अन्दर उसके बेडरूम में चले गए।

अन्दर जा कर मैंने उसे कस के पकड़ लिया और उसे चूमने लगा। गीता भी मुझे किस करने लगी। फिर मैंने धीरे धीरे उसके स्तन सहलाने शुरू कर दिए। वो इतनी गरम हो गई कि उसने अपने आप ही अपने कपड़े उतार दिए। शायद वो काफी दिनों से सेक्स के लिए प्यासी थी।

तभी अचानक मुझे कुछ सूझा और मैंने उसे कहा- पहले मैं तुम्हारी मालिश करता हूँ तेल से, फिर हम प्यार करेंगे !

फिर मैंने एक हाथ में तेल लिया और उसको पेट के बल लेटा दिया।

पहले मैंने उसकी पीठ पर मालिश करनी शुरू की। फिर धीरे धीरे मैं उसके चूतड़ों पर मालिश करने लगा और उसकी चूत पर भी हाथ फेरने लगा। फिर मैंने उसे सीधे होने को कहा।

अब उसके स्तन सीधे मेरे सामने थे। मैं धीरे धीरे उसके स्तनों पर गोल गोल हाथ फेरने लगा, वो सिसकियाँ भरने लगी। उसके बाद मैंने धीरे धीरे उसकी टाँगे चौड़ी करी और उसकी चूत पर मालिश करने लगा।

वो इतनी गरम हो चुकी थी कि उस से रहा नहीं गया और मेरा लण्ड पैंट के ऊपर से ही पकड़ लिया, कहने लगी- अब मुझसे और नहीं रहा जाता !

फिर उसने जल्दी जल्दी करके मेरी पैंट उतार दी और मेरा लण्ड लॉलीपोप की तरह चूसने लगी। मैंने अपनी शर्ट भी उतार दी और मैंने उस से 69 पोजिशन में आने के लिए कहा। फिर मैं उसकी चूत को चाटने लगा, वो मेरे लण्ड को लॉलीपोप की तरह चूस रही थी।

अचानक उसकी चूत से काफी सारा पानी निकलने लगा, वो स्खलित हो गई। फिर मैंने उसे उठाया और नीचे बेड पर लेटा दिया पर आज मेरा मन उसकी गांड मारने का कर रहा था। मैंने उसे कहा- कि तुमने कभी गांड मरवाई है?

वो कहने लगी- नहीं !

मैंने कहा- आओ ! आज तुम्हें उसका मजा देता हूँ !

तो वो बोली- बहुत दर्द होगा !

मैंने कहा- पहले पहले होगा, फिर मजा आएगा !

तो वो मान गई फिर मैंने उसकी गांड पर तेल लगाया और अपने लण्ड पर भी, और उसकी गांड के मुंह पर अपना लण्ड रख के धक्का मारा। मेरा लण्ड थोड़ा सा अन्दर चला गया पर वो चिल्लाने लगी, कहने लगी- इसमें तो बहुत दर्द होता है, इसे बाहर निकालो !

पर मैंने कहा- डरो मत ! बस एक बार ही दर्द होगा, फिर नहीं !

फिर मैंने एक जोर से झटका मारा और मेरा लण्ड उसकी गांड में चला गया। फिर मैंने उसको धक्के मारने शुरू किया, धीरे धीरे उसका दर्द कम हुआ तो उसको भी मजा आने लगा।

अब वो भी अपने चूतड़ उछाल उछाल के मेरा साथ देने लगी। फिर मैंने अपना लण्ड उसकी गांड में से निकाल के उसकी चूत में डाल दिया और झटके मारने लगा।

१० मिनट बाद वो और मैं दोनों इक्कठे झड़ गए।

इसके बाद हम दोनों काफी देर तक ऐसे ही लेटे रहे, फिर हम दोनों ने अपने कपड़े पहने और मैं चलने लगा तो उसने मुझसे कहा- कल आओगे?

मैंने कहा- तुम बुलाओ और मैं न आऊं ! यह तो हो ही नहीं सकता !

फिर वो कहने लगी- यह बात गुप्त रहेगी न ?

मैंने कहा- भरोसा रखो, कोई भी बात गुप्त रखना तो मेरा पहला धर्म है !

उसने पूछा- तुम्हारी फीस कितनी है?

मैंने कहा- मैं फीस के लिए यह नहीं करता ! मुझे यह पसंद है !

फिर भी उसने मुझे ४००० रुपए दिए और दुबारा अगले दिन आने के लिए कहा।

कहानी पर अपनी राय मुझे अवश्य भेजिएगा !

sachonline4u@gmail.com

०६ जून, २००९

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय !

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

टूटे से फिर ना मिलै, मिलै गाँठ परि जाय !

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

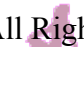
अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना



अन्तर्वासना

अन्तर्वासना